हमारे विरोधी बन जाएं। फिर भी, हम वही करेंगे जिससे देश की नींव मजबूत हो और जो जनता के हित में हो, उसके लिए सुंदर भविष्य लाने वाला हो।

एक बात और, विपक्षी दलों को यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि भारतीय जनता, तुच्छ स्त्री -पुरुषों की जाति की है। यह स्वार्थी लोगों का या भ्रष्टाचारियों का राष्ट्र नहीं है। यह वह भारत खंड है जिसने महानता के सपने देखे थे और जिसकी महानता शस्त्रों की शक्ति या आर्थिक दर्प से प्रेरित नहीं थी बल्कि मानव-मूल्यों से ओत-प्रोत थी। अगर हमने देश के प्रति लोगों के गर्व को ही समाप्त कर दिया, अगर हमने जनता के आत्म सम्मान को ही नष्ट कर दिया, अगर हमने उनके अपनी क्षमता में विश्वास को ही तोड़ दिया तो क्या हमें कभी भी कुछ उपलब्धि हो सकेगी?

बहुतेरे लोग ऐसे हैं जो अपने आप को हीन समझते हैं। लेकिन ऐसे लोगों द्वारा भविष्य नहीं निर्मित होगा। इसलिए मैं विपक्ष के माननीय सदस्यों से अनुरोध करूंगी कि वे इस चुनौती का सामना करने के लिए लोगों की संकल्प शक्ति को कमजोर न बनाएं।

जैसा कि मैं पहले कह चुकी हूं, लोगों ने दृढ़ निश्चयी होने का परिचय दिया है, उन्होंने अपार धैर्य से काम लिया है। उन्होंने कठिनाइयों को झेलने की क्षमता दिखाई है। वे खतरों से सहम नहीं गए है। आज ये सभी स्थितियां हमारे सामने हैं। आर्थिक मोर्चे पर हमारे सम्मुख एक प्रबल चुनौती है। अन्य मोर्चों पर भी चुनौतियां मौजूद हैं। उनका सामना हम तभी कर सकते हैं जब हमें पक्का विश्वास हो कि हम सामना कर सकेंगे।

हमेशा यह रटते रहना कि कुछ भी उपलब्ध नहीं हुआ है, कि देश रसातल को जा रहा है, तथ्यों से आंखें मूंद लेना है। अनेक कठिनाइयों और कष्टों के बावजूद देश न तो रसातल की ओर गया है, न यहां कोई बरबादी या अराजकता है। लेकिन रात-दिन जो बातें होती रहती हैं उन्हीं के कारण लोगों का अपनी योग्यता में विश्वास डिगने लगता है। यह बात मुझसे नौजवान वैज्ञानिकों ने कही है, इंजीनियरों ने कही है, किसानों ने कही है और प्रायः सभी वर्गों के लोगों ने कही है। कहा है कि प्रायः हर घड़ी, हर मौके पर देश के मनोबल को गिराने वाली चर्चाएं होती हैं। अगर यह देश सचमुच रसातल को जा रहा है तो हममें से कुछ को, कम से कम उनको, जिनके पास साधन है, जाकर दूसरे देशों में बस जाना चाहिए। तो, ऐसा माहौल पैदा किया जा रहा है। मैं इस सदन से यही आग्रह करूंगी कि हम इस प्रस्ताव को ठुकरा कर सदन को यह दिखा दें कि हम आज की चुनौती का सामना दृढ़ता और संकल्प के साथ, साहस और सम्मान के साथ करने को कटिबद्ध हैं।

उज्ज्वल भविष्य की ओर

हमारे सुदीर्घ इतिहास में, भारत के लोगों को अनेक प्रकार के उतार और चढ़ाव देखने पड़े हैं, अनेक प्रकार के कष्ट सहने पड़े हैं। लेकिन वर्तमान समय मे आर्थिक समस्याएं सबसे ऊपर हैं जिनका प्रभाव सभी पर पड़ता है। इस प्रकार, मुझे जहां अपने स्वतंत्रता दिवस पर खुशी है वहीं मेरा दिल रंज और चिंता से भी भरा है। आपको जो मुश्किलें झेलनी पड़ रही हैं, उनका मुझे अहसास है। आर्थिक कठिनाइयों से त्रस्त जनता की मुसीबतें बाढ़ और सूखे के कारण और बढ़ गई हैं। मेरी सहानुभूति आप सबके साथ है।

आज का सबसे अहम मसला है मूल्यों में वृद्धि और जरूरत की चीजों की कमी। आप उन परिस्थितियों से भी वाकिफ हैं जिनके कारण यह सब हुआ है। लेकिन इससे हमें यह नहीं मान

लालकिले से राष्ट्र के नाम संदेश, दिल्ली, 15 अगस्त 1974

लेना चाहिए कि पिछले वर्षों में कोई उपलब्धि नहीं हुई है। एक प्रकार से हमारी आर्थिक कठिनाइयां इसलिए पैदा हुई हैं क्योंकि हमने एक हद तक प्रगति की है और संकटों तथा चुनौतियों का सामना किया है। लेकिन आज हमें इस बहस में नहीं पड़ना है कि ये कठिनाइयां पैदा कैसे और क्यों हुईं। इसके बजाय हमें यह सोचना है कि किस तरीके से हम मिलजुल कर इन पर पार पा सकते हैं। अतीत में भी भारतीय जनता ने ऐसी कठिनाइयों से लोहा लिया है और उन पर विजय पाई है।

सूखा और युद्ध के कारण चीजों की कमी हो गई है। हमारी कृषि की उपज में अच्छी प्रगति हुई है और आपको मालूम है कि वह पहले से दुगुनी या तिगुनी हो गई है। लेकिन गत चार वर्षों में प्रगति की रफ्तार वैसी ही नहीं रही है जैसी उससे पहले के वर्षों में थी। खास तौर पर इस साल उर्वरकों और बढ़िया बीजों की कमी के कारण कठिनाई और बढ़ गई है। फिर भी अभाव इतना नहीं है कि उसे सहन न किया जा सके। हमें अपनी आदतें बदलनी होंगी, परम्परागत तरीके बदलने होंगे और शायद कुछ हद तक कष्ट भी सहना पड़े। अगर हम इस स्थिति को स्वीकार कर लें तो ज्यादा मुश्किलें पेश नहीं आएंगी। सबसे ज्यादा खतरनाक बात यह होगी कि हम हताश हो जाएं और यह महसूस करने लगें कि कुछ भी नहीं किया गया है और कुछ भी नहीं किया जा सकता।

ऐसे समय में हरेक की कोई न कोई जिम्मेदारी होती है। निस्सदेह सबसे पहला दायित्व सरकार का है और हम इस बात की अनदेखी नहीं कर रहे हैं। आपने देखा होगा कि कुछ समय से हम सरकारी खर्च में कमी करने के लिए कई कड़े कदम उठाते रहे हैं। कई ऐसे कार्यक्रमों को भी स्थगित कर दिया गया है जो जनहित में थे लेकिन अनिवार्य नहीं थे। अनेक चीजों का अभाव है और सरकार उनके इस्तेमाल में कमी करने की ओर ध्यान दे रही है जिससे उन्हें आवश्यक कामों के लिए सुरक्षित रखा जा सके। हमारा यह इरादा कभी नहीं था कि हम वेतनों और महंगाई भत्तों को बांध दें या कम कर दें। हम तो इतना ही चाहते हैं कि उसका एक भाग अलग रख दिया जाए और उसे खर्च न किया जाए। इस प्रकार जो पैसा जमा होगा उस पर आकर्षक ब्याज भी मिलेगा। जब खर्चे बढ़ जाते हैं तो मुद्रा की सप्लाई बढ़ जाती है और उत्पादन में सानुपातिक वृद्धि नहीं हुई तो उसके गम्भीर परिणाम होते हैं।

आप सब जानते हैं कि सरकार को सूखाग्रस्त क्षेत्रों के लोगों को राहत देने के लिए युद्ध के दौरान अनिवार्यतः जरूरी खर्चे उठाने पड़े। कुछ अन्य अनिवार्य खर्चे भी करने पड़े जिससे मुद्रास्फीति और ज्यादा बढ़ गई। हम इस समय मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने में लगे हैं और हमें कुछ हद तक सफलता भी मिली है। अगर आप इस मसले के सभी पहलुओं को समझेंगे और अपना सहयोग हमें देंगे तो हमें और बड़ी कामयाबी हासिल होगी और हम इस स्थिति से उबर सकेंगे।

हमारे किसान हमें काफी मदद दे रहे हैं। अक्सर यह बहस छिड़ जाती है कि प्राथमिकता खेती को मिलनी चाहिए या उद्योग को। अब, इन दोनों में भेदभाव का कोई सवाल नहीं है। हमें देखना है कि दोनों ही साथ-साथ आगे बढ़ें। हमारे किसान देश के अन्नदाता हैं और यह उन्हीं की मेहनत का फल रहा है कि देश ने शताब्दियों से अपना अस्तित्व बनाए रखा है। इसलिए यह स्वाभाविक है कि उन्हें सभी सम्भव सहायता दी जाए जिससे उपज बढ़े और गांव वालों के रहन-सहन का दर्जा ऊंचा हो। उनका यह कर्तव्य है कि वे एक-एक इंच जमीन को खेती के काम में लाएं और हम सबका यह कर्तव्य है कि हम जमीन के उपजाऊपन को हानि पहुंचाने वाला कोई काम न करें।

रासायनिक खादों की मांग काफी बढ़ गई है और इन उर्वरकों की कमी पड़ रही है। यह कमी केवल इसलिए नहीं है कि उत्पादन कम हो रहा है बल्कि इसलिए भी है कि मांग बढ़ गई है। आज छोटा किसान भी रासायनिक खादों का प्रयोग करना चाहता है और हमें वास्तव में खुशी है कि वह

आधुनिक तकनीकें अपना रहा है। लेकिन साथ ही हमें यह भी देखना है कि क्या हम वैकल्पिक स्रोतों से काम ले सकते हैं या नहीं। अब कुछ अमीर देश भी पुराने तरीकों की ओर लौट रहे हैं। यह सब अभाव की स्थिति के कारण हो रहा है। यह इसलिए भी हो रहा है कि उन्होंने महसूस किया है कि पुराने और नए तरीकों के मिले-जुले प्रयोग से ही संतोषप्रद परिणाम निकल सकते हैं। जब रासायनिक खादों का प्रचलन आरम्भ हुआ था तो किसान ने देखा कि उसके प्रयोग से उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। और उसने उनका इस्तेमाल अधिकाधिक मात्रा में करना शुरू कर दिया। उसने सामान्य खादों का प्रयोग बंद कर दिया जिनको वह पहले इस्तेमाल करता था, जैसे गोबर की खाद, हरी खाद या कूड़े-कचरे की खाद। अब, कमी की स्थिति का सामना करने तथा यह सुनिश्चित बनाने के लिए भी, कि भूमि की उर्वरता काफी अच्छी बनी रहे, यह जरूरी है कि दोनों ही किस्मों की खादें साथ-साथ दी जाएं।

यही स्थिति बिजली जैसे अन्य साधनों की कमी की है। सरकार अधिक बिजली पैदा करने के लिए सभी तरह के उपाय कर रही है। तेल की भी कमी है और हमने तेल की खोज का काम शुरू किया है। फिर भी, हमें ऊर्जा के ऐसे वैकल्पिक स्रोतों का पता लगाना होगा जिनको काम में लाया जा सके। इस क्षेत्र में भी अगर हम पश्चिमी देशों की ओर नजर डालें तो हम पाएंगे कि बहुत से पुराने तरीकों को फिर से अपनाया जा रहा है। इसे स्थायी रूप से भले ही न अपनाया जाए लेकिन स्थिति की कठिनाई को कुछ कम करने के लिए फिलहाल यह जरूरी माना जा रहा है। हमें यह भी देखना है कि हम सूर्य की ऊर्जा और पवन-ऊर्जा का लाभ कैसे उठा सकते हैं। यह सब खोज-कार्य आज केवल वैज्ञानिकों तक सीमित नहीं रहने चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को चाहे वह गांव में रहता हो या शहर में, नए तरीके खोजने की कोशिश करते रहना होगा और अपनी खोज के परिणाम समाज के लाभ के लिए प्रयोग में लाने होंगे। एक ओर तो किसान को देखना है कि कृषि की उपज बढ़े, दूसरी ओर, हमारे उद्योगों का भी विकास होना है। अगर उद्योग नहीं होंगे तो हमारी जरूरत की बहुत-सी चीजें नहीं मिल पाएंगी और किसान को भी अपनी बुनियादी जरूरत की चीजें नहीं मिल सकेंगी। किसान को जिस किसी भी वस्तु की आवश्यकता है—अच्छे बीज, ट्रैक्टर या अन्य उपकरण, उस सबका उत्पादन बड़े कारखानों में होता है जिन पर हमें करोड़ों रुपये खर्च करने पड़ते हैं। जिन अमीर किसानों को नई तकनीकों से फायदा पहुंचा है उन्हें चाहिए कि वे ग्रामीणों के रहन-सहन का दर्जा बढ़ाने में मदद करें। गांवों में जितनी अधिक जाग्रति होगी, उतनी ही अधिक खेती की उपज बढ़ेगी और उसी अनुपात में उन्हें सुख-सुविधा वाली चीजें उपलब्ध होंगी।

आज जब हम टैक्स बढ़ाते हैं तो भार किस पर पड़ता है? दुर्भाग्यवश अमीर लोग किसी-न-किसी तरह से कर-अपवंचन में सफल होते हैं। उनमें से बहुतों का नाम आयकर दाताओं की सूची में है ही नहीं। सभी व्यापारी बुरे नहीं होते, लेकिन उनमें से कुछ की काली करतूतों की वजह से पूरे व्यापारी वर्ग को बदनामी मिलती है। जो लोग टैक्स नहीं देते या मिलावट वाली दवाइयां अथवा खाद्य-पदार्थ बेचते हैं या जो जमाखोरी और कालाधन कमाने में लगे हैं वे ही देश के दुख-संकट के लिए जिम्मेदार हैं। वे भारत का नाम कलंकित करते हैं। कुछ लोग अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए भविष्य का कोई विचार किए बिना लोगों की मुश्किलों से फायदा उठाते हैं। सवाल सिर्फ औरों के भविष्य का ही नहीं, स्वयं उनके बच्चों के भविष्य का भी है तो, इस प्रकार जब कुछ बड़े लोग और मध्य वर्ग वाले लोग भी, जैसे ठेकेदार, डाक्टर, वकील तथा स्वरोजगार वाले लोग, टैक्स नहीं देते तो क्या नतीजा होता है? यह, कि करों का पूरा भार उन पर पड़ता है जो वेतनभोगी या निश्चित आय वाले लोग हैं।

हम पर कभी-कभी यह आरोप लगाया जाता है कि हमने कृषि भूमि की अधिकतम सीमा तो लागू कर दी है लेकिन हम शहरों के निवासियों की अनदेखी कर रहे हैं। शहरों में काफी संख्या में

सम्पन्न लोग रहते हैं, क्या हम उनकी अनदेखी कर रहे हैं? कुछ उपाय किए गए हैं। टैक्स बढ़ाए गए हैं और यह पता लगा रहे हैं कि किस प्रकार से हम दौलत को सीमित कर सकते हैं। जब तक लोग एक दूसरे का बोझ बटाएंगे नहीं तब तक देश आगे कभी नहीं बढ़ सकता।

जैसे देश किसानों के काम-काज पर निर्भर करता है वैसे ही वह श्रमिकों की उत्पादन क्षमता और अनुशासन तथा उद्योगों के प्रबन्ध पर भी निर्भर करता है। उत्पादन हम केवल कठोर परिश्रम के जरिए ही बढ़ा सकते हैं और आपसी मतभेद दूर करके ही हम अपने किसानों और देश की मदद कर सकते हैं। आज सभी वर्ग कठिनाई महसूस कर रहे हैं। दरअसल पूरे विश्व को हमेशा ही किसी न किसी कठिनाई का सामना करना पड़ा है। मुझे इस तथ्य का अहसास है कि जब बड़ी-बड़ी मुश्किलें आती हैं तो ज्यादा बोझ उन पड़ता है जो ज्यादा गरीब हैं क्योंकि अमीरों में कठिनाइयां झलने और अपने आपको बचाए रखने की अधिक क्षमता होती है। यही बात अमीर राष्ट्रों पर भी लागू होती है। भारत एक गरीब देश हो सकता है और इसलिए उस पर पड़ने वाले भार से उसे कष्ट हो सकता है, लेकिन हम यह भी जानते हैं कि भारतीयों ने किसी भी प्रतिकूल परिस्थिति में उम्मीद का दामन कभी नहीं छोड़ा है। इसके विपरीत, तमाम कठिनाइयों से गुजरकर लोग और मजबूत बने हैं।

आज हमें यह सोचना है कि हम समाज को उसकी बुराइयों से मुक्त कैसे कर सकते हैं। क्या ऐसा हम हिंसा और आंदोलनों के जरिए करेंगे? क्या हम एक दूसरे से लड़कर यह काम कर पाएंगे? समस्याएं जटिल हैं और हमें मिलजुल कर रहना होगा और देखना होगा कि समस्या का समाधान क्या हो सकता है। निस्संदेह सरकार की अपनी जिम्मेवारी है पर क्या प्रत्येक व्यक्ति भी किसी-न-किसी अंश में अपना योगदान नहीं कर सकता? क्या हमारे भाई-बहन ऐसी चीजें खरीदने से गुरेज नहीं कर सकते जो बाजार में खुले तौर पर न मिलती हों, जो केवल काले बाजार में मिलती हों? क्या कुछ अन्य भाई-बहन, अगर उनके पास उगाने की जमीन नहीं है तो, कनस्तरों में और गमलों में साग-सब्जी नहीं उगा सकते, अपने शहर को साफ सुथरा नहीं रख सकते, अपने पास-पड़ोस में प्रचलित बुराइयों को निर्मूल करने में मदद नहीं दे सकते? प्रत्येक नागरिक, वह चाहे जिस श्रेणी का हो और चाहे जिस आय-वर्ग का हो, कुछ-न-कुछ ऐसा अवश्य कर सकता है जो न केवल उसके लिए बल्कि पूरे राष्ट्र के लिए हितकर हो।

दुर्भाग्यवश, हमारी आदत यह है कि जब कोई शुभ-काम पूरा होने को होता है तो हम आत्मतुष्टि की भावना से ग्रस्त हो जाते हैं। और जब कोई कठिनाई आ उपस्थित होती है तो हम नाउम्मीद हो जाते हैं। कभी-कभी तो ऐसा लगने लगता है कि पूरे राष्ट्र ने ही पराजय-भावना को अपना लिया है। लेकिन आशा का दामन छोड़ देने से कभी कोई समस्या हल नहीं होती। मैंने कुछ समस्याएं गिनाई हैं। इनके अलावा भी मसले हैं। उदाहरण के लिए हमारी आबादी बहुत तेज गति से बढ़ रही है और हरेक वर्ग के लोग हर चीज की ज्यादा मात्रा में मांग कर रहे हैं। आज साइकिल, मोटर साइकिल, ट्रैक्टर और ट्रांजिस्टर गांवों में आमतौर पर देखे जा सकते हैं यद्यपि कुछ ही वर्ष पहले किसी को इनका स्वप्न में भी ख्याल नहीं आता था। यह सब निस्संदेह शुभ है। लेकिन अगर अपनी जनता के रहन-सहन का दर्जा ऊंचा उठाना है तो हमें अपनी आबादी पर नियंत्रण करना होगा।

हम अपने देश को मजबूत करने के लिए अपनी कोशिशें दुगुनी कर रहे हैं। हाल में हमने एक परमाणु-विस्फोट किया है जिससे हमारा आत्मविश्वास और बढ़ा है। इसके लिए कुछ देशों ने हमारी आलोचना की है। कुछ गलतफहमियां भी हुई हैं और कुछ लोगों ने इस मौके का फायदा उठाकर हमें बदनाम करना चाहा है। लेकिन हमने यह स्पष्ट कर दिया है कि हमारे पास जो भी

ऊर्जा है, चाहे वह परमाणविक हो या अन्य, हम उसका इस्तेमाल जनता की भलाई के लिए करेंगे और उसके विकास के लिए सहयोग करेंगे।

अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अनेक घटनाएं हुई हैं और बहुत-सी नई ताकतें उभर कर सामने आई हैं। भारत ने सभी से हमेशा दोस्ती रखने की कोशिश की है और, जैसा कि आपको मालूम है, मित्रता की यह भावना वस्तुतः और बढ़ी है। आपने गौर किया होगा कि हमने किस प्रकार अपने पड़ोसी देशों के साथ समझौते किए हैं। हमने ऐसा तनाव कम करने के उद्देश्य से किया है, और मैं समझती हूं कि हमने दुनिया के सामने एक मिसाल रखी है। लेकिन हमारे अनुभव से हमारे सभी पड़ोसियों को सीख मिली हो, ऐसा नहीं लगता। हमारे कुछ पड़ोसी देश हमें आज भी धमकी देने की कोशिश कर रहे हैं। हमें आशा है कि शांति भंग नहीं होगी और सभी गरीब विकासशील देशों को अपनी सामाजिक और आर्थिक प्रगति के लिए काम करने का मौका मिलेगा और उनका ध्यान बंटाया नहीं जाएगा। लेकिन जिस संसार में हम रहते हैं उसमें हमारी आंतरिक कठिनाइयां जो भी हों, हम बाहरी खतरों की ओर से आंखें नहीं मूंद सकते। हमें हमेशा ही चौकस रहना होगा।

हमारा देश पिछले कुछ वर्षों में और मजबूत हुआ है। हमारे लम्बे इतिहास के दौरान हम मुश्किलों का सामना करना पड़ा है, और आपको पता है कि हमें किन-किन समस्यायों से जूझना पड़ा—एक युद्ध में संलग्न होना पड़ा और लाखों शरणार्थियों की चिंता करनी पड़ी। लेकिन इसके बावजूद हमने अपने विकास कार्यक्रमों को आगे बढ़ाया और हम भविष्य में भी ऐसा करते रहेंगे। मेरा आपसे इतना ही कहना है कि आप हिम्मत कभी न हारें और देश तथा भारतीय जनता के भविष्य में आस्था रखें।

कभी-कभी युवावर्ग में असंतोष और अशांति देखन में आती है। यह स्वाभाविक ही है। लेकिन इस युवा-शक्ति को उपयोग में लाया जाए? क्या हम इसे जाने दें या किसी रचनात्मक दिशा में लगाएं? युवावर्ग को हमारी अपेक्षा कहीं ज्यादा एक सशक्त भारत की आवश्यकता है देश को भी उत्साही युवाजनों की जरूरत है। आज हमें अपने आप को समर्पित करना है अंधकार के पर्दे को फाड़कर देश के उज्ज्वल भविष्य का दर्शन करने के लिए। ऐसा कोई भी देश नहीं है जिसने कठिनाइयों या खतरों का सामना किए बिना अपने भविष्य को संवारा हो। अगर हमें आने वाले इतिहास का निर्माण करना है, तो हमें तेजी से आगे बढ़ना होगा और गरीबी, भेदभाव, सामाजिक बुराइयों तथा निराशा जैसी बातों को अलग कर देना होगा क्योंकि ये राष्ट्र को कमजोर बनाने वाली हैं।

मेरे सामने बहुत से बच्चे बैठे हैं। मैं जब कभी भी उन्हें देखती हूं तो मेरा मन गांवों और शहरों के अन्य बच्चों की ओर खिंच जाता है। हम इन सबके लिए किस भविष्य को गढ़ेंगे? हमारा युग हमारे गौरवशाली अतीत और उज्ज्वल भविष्य को जोड़ने वाली एक कड़ी है। हम पर एक महान दायित्व है। हमें साथ मिलकर इन जिम्मेदारियों को पूरा करना है और अपने बच्चों के लिए हम जो आशाएं पाल रहे हैं उन्हें साकार करना है। शांति और मित्रता, देश को मजबूत करने और यहां समाजवाद और एकता लाने की हमारी नीतियों के कारण भारत को विदेशों में आदर मिलता है। हम सबकी यह जिम्मेदारी है कि हम इस प्रतिष्ठा को बढ़ाते रहें। भारत शक्तिशाली तो है पर उतना नहीं जितना हम उसे देखना चाहते हैं।

भारत अधिक शक्तिशाली तभी बनेगा जब हताशा की भावना दूर हो जाएगी और एक-एक व्यक्ति हिम्मत से काम लेगा। हम यह या वह उपलब्ध कर सकते हैं या नहीं, इसका जवाब मैं भी दे सकती हूं, और आप भी। भारत का भविष्य प्रत्येक नागरिक पर उतना ही निर्भर

है जितना मुझ पर या सरकार पर। मुझे अहसास है कि जब काले बादल घिर आते हैं तो लोग अक्सर भूल जाते हैं कि बादलों के पीछे छिपे सूरज की रोशनी वे देख चुके हैं, उस क्षणिक अंधकार का यह तात्पर्य नहीं है कि चमचमाती धूप या रोशनी का अस्तित्व ही मिट गया। धूप तब भी मौजूद रहती है और जिसके पास उसे देखने वाली आंखें हैं और आत्मा तथा मन की शक्ति है वह आगे बढ़ेगा और देश को आगे बढ़ाने में सहायक बनेगा।

यह बात है जो आज हमें सीखनी है क्योंकि हम जानते हैं कि आजादी की लड़ाई हमने आसानी से नहीं जीती है। हमें कुर्बानियां देनी पड़ीं, और निराशा तथा अंधकार की घड़ियों से गुजरने के बाद ही हम 15 अगस्त की उस मंजिल पर पहुंचे जिसमें हमने पहली बार तिरंगे ध्वज को यहां फहराया। यह तीन रंगों वाला झंडा कपड़े का एक टुकड़ा मात्र नहीं है। हम झंडे का आदर क्यों करते हैं? दरअसल हरेक देश अपने झंडे का आदर करता है। देश के वीर सैनिक इसकी शान बचाने के लिए जान देने को तैयार रहते हैं। आखिर क्यों? इसलिए, कि यह देश की ताकत, देश की आशा-आकांक्षा और महानता का प्रतीक है। यही वजह है कि कपड़े का यह टुकड़ा हमारे इतने अधिक आदर की वस्तु है। लेकिन वास्तविक आदर केवल शब्दों द्वारा या इसे फहराकर व्यक्त नहीं किया जा सकता है। वास्तविक आदर तो उस वातावरण को तैयार करके ही दिखाया जा सकता है जिसमें यह आन-बान-शान से ऊंचा रहे। हम इसे युद्ध-काल में ऊंचा रखते हैं, लेकिन हमें देखना होगा कि अपने राष्ट्रीय, राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन में भी हम ऐसा कुछ न करें जिससे किसी भी देश की या स्वयं हमारी निगाह में इसके प्रति आदर में किसी भी प्रकार की कमी आए। हम सबको इस सम्बंध में सोचना चाहिए और स्वयं निर्णय करना चाहिए कि हम अपने ध्वज को ऊंचा कैसे बनाए रख सकते हैं और कैसे देश को मजबूत कर सकते हैं। हमें अपने बच्चों और युवाओं के लिए एक सुंदर भविष्य का निर्माण करने के उपायों पर निर्णय करना होगा।

15 अगस्त त्याग और बलिदान का दिवस है। साथ ही, यह ऐसा भी दिन है जब हम अपने भविष्य में झांकने का प्रयास करते हैं। जब तक सभी जातियों, वर्गों, सम्प्रदायों और भाषाओं वाले लोग एक नहीं होंगे तब तक हम कुछ भी उपलब्ध नहीं कर पाएंगे। साम्प्रदायिकता और जातिवाद केवल हमें कमजोर ही बनाएगी। कुछ हद तक उनका असर कम हुआ है, लेकिन कुछ मायनों में वह बढ़ा भी है। अब अगर हम इनके असर को कम करने में सफल हुए हैं तो क्यों नहीं हम उसे निर्मूल कर सकते? हम उन लोगों को न्याय क्यों नहीं दे सकते जो अब तक दलित रहे हैं और जिन्हें लगातार न्याय से वंचित रहना पड़ा है?

जब मैंने अपना भाषण आरम्भ किया था तो मैंने कहा था कि मेरा मन चिंता और दुख से भरा है लेकिन मैं आपसे यह कहना चाहती हूं कि इस दुख ने किसी भी तरह से मुझे इतना आक्रांत नहीं किया है कि मैं भविष्य को न देख सकूं। दुख, चिंता और बोझ का अहसास तो है लेकिन इनके साथ-साथ मैं ऐसे उज्ज्वल भविष्य को भी देख पा रही हूं जो सुदूर न होकर सन्निकट है। मैं यह भी देख पा रही हूं कि हमें कैसे एक-एक कदम आगे बढ़ना है ताकि हम अपने लक्ष्य तक पहुंच सकें। मुझे विश्वास है कि आप सभी इसी आस्था और बल के साथ आगे बढ़ सकेंगे, जिससे अगले 15 अगस्त तक हम आज की अधिकांश बुराइयों को निर्मूल कर सकें, कठिनाइयों पर विजय पा सकें तथ देश को अंधकार से प्रकाश के दायरे में पहुंचा सकें। आप सबको, जो यहां दिल्ली में मेरे सामने हैं, और उन सबको भी, जो रेडियो पर मुझे देश के कोने-कोने में सुन रहे हैं, मैं एक बार फिर अपनी बधाई और भविष्य के लिए शुभकामनाएं देती हूं। मैं एक बार फिर कहना चाहूंगी कि सब भारत के सैनिक हैं चाहे हम वर्दी में हों या सादी पोशाक में। जवानों की तरह हमें सीधे खड़ा होना है और साहस तथा पक्के संकल्प के साथ आगे बढ़ना है।